शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र
'पथिक' काव्य खण्ड
कवि-राम नरेश त्रिपाठी Date _____ Page _____

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न:- 'प्रकृति' से मानव का क्या सम्बन्ध है?

उत्तर:- प्रकृति से मानव का अभिन्न और चिरन्तन सम्बन्ध रहा है। साहित्य मानव की चित्तवृत्तियों का प्रतिबिम्ब होता है। अतः प्रकृति भी उसी मात्रा में अभिव्यक्ति पाती है, जिस मात्रा में उसका मानव से संबंध रहता है। वह सत्य प्रेरणाओं के मामले में चेतनशील समाज से कभी पीछे नहीं है। इससे से यह स्पष्ट होता है कि प्रकृति से मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

प्रश्न:- आलम्बन रूप में प्रकृति का चित्रण कवि किस प्रकार किया है?

उत्तर: आलम्बन रूप में प्रकृति साध्य होती है। इसकी स्वतंत्र सत्ता होती है। आलम्बन के रूप में ही कवि उसका वर्णन करता है। 'पथिक' काव्य में कवि ने प्रकृति के विभिन्न रूपों का आलम्बन रूप में वर्णन किया है।

प्रभात, चाँदनी रात, समुद्र तट पर वन इत्यादि के वर्णन में कवि एक संवेदनशील दर्शक की भाँति प्रकृति के इन भिन्न-भिन्न रूपों को देखता है। वह जो देखता है, उसका चित्र एक सफल चित्रकार की भाँति शब्द और अर्थ के सहारे अपने काव्य में उतार देने का चेष्टा करता है। इस कला में कवि रामनरेश त्रिपाठी को अप्रतीत सफलता मिली है। यही कारण है कि कवि द्वारा 'पथिक' में प्रकृति का आलम्बन रूप का वर्णन बहुत सुन्दर हुआ है।

प्रश्न:- 'पृष्ठभूमि' के रूप में प्रकृति का चित्रण किस प्रकार किया है?

उत्तर:- पृष्ठभूमि का अर्थ है 'भूमिका'। किसी बात को नये ढंग से शुरू कर उसे प्रभावशाली रूप में रखने के लिए भूमिका की आवश्यकता पड़ती है। इसमें एक रमणीय वातावरण की त्वरित अवतारणा हो जाती है। 'पथिक' के पहले, दूसरे, तीसरे एवं पाँचवें सर्गों में इसी प्रकार की काव्य-भूमिकाओं का वर्णन किया गया है।

शेष अगे-

Date: _____ Page: _____

प्रथम सर्ग में प्रभात सौन्दर्य की अवतारणा है, तो दूसरे में मध्य रात्रि की चाँदनी में खुले वातावरण का दृश्य है। यथा-

मध्य निशा निर्मल निरभ्र नभ दिशा विराम - विहान।
विलसित था अम्बर के ऊपर अद्भुत एक नगीना ॥

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महा वि० सुखसेना, पुर्णियाँ
07/08/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र
'निर्मला' उपन्यास
मुंशी प्रेमचन्द

Date ______ Page ______

प्रश्न:- हिन्दी उपन्यास के दूसरे चरण का वर्णन करें।

उत्तर: हिन्दी-उपन्यास साहित्य के विकास में द्वितीय चरण का आरम्भ उपन्यास क्षेत्र में प्रेमचन्द के आगमन से माना जाता है। यद्यपि प्रेमचन्द के पूर्व से ही हिन्दी उपन्यासों में कथावस्तु, कथा-गठन, शैली और उद्देश्य आदि की दृष्टि से अन्तर आने लगा, लेकिन यह अन्तर इतना स्पष्ट नहीं हो पाता था कि स्पष्ट रूप से उसे विकास के दूसरे चरण का द्योतक मान लिया जाय। प्रेमचन्द के उपन्यास क्षेत्र में आगमन से यह अन्तर बिल्कुल स्पष्ट हो गया। यही कारण है कि प्रेमचन्द से ही हिन्दी-उपन्यास साहित्य के विकास का दूसरा चरण माना जाता है। सेवा-सदन को उदाहरण के रूप में देख सकते हैं। 'सेवा-सदन' हिन्दी का पहला उपन्यास है, जिसमें सामाजिक संघर्ष को अपने यथार्थ रूप में कथावस्तु का आधार बनाया गया है। इसे हम हिन्दी-उपन्यास साहित्य के विकास का मूल स्तम्भ कह सकते हैं।

मुंशी प्रेमचन्द ने एक नई राष्ट्रीय चेतना लेकर उपन्यास लिखना आरम्भ किया था। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन और राष्ट्रीय चेतना ने एक संगठित शक्ति का रूप ग्रहण कर लिया था। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र काल में जो राष्ट्रीय जागरण केवल सांस्कृतिक सुधार तथा भारतीय गौरव के पुनरुत्थान के रूप में प्रारम्भ हुआ था, वह स्वराज्य स्थापना का रूप ग्रहण कर चला था। परिणामतः साहित्य में भी हमें परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में निम्न वर्ग, मध्यम वर्ग, किसान वर्ग और मजदूर वर्ग के जीवन की आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं के साथ-साथ उनके सम्बन्धों से उत्पन्न पारिवारिक एवं व्यक्तिगत जीवन की समस्याओं का चित्रण किया है। हमारे समाज का पूरा जीवन उनके उपन्यासों में चित्रित हुआ है। उनके प्रारम्भिक उपन्यासों में आदर्श की स्थापना का आग्रह है, ऐसा आदर्श जिसे वे पहले से सोचकर और उसे अपनी कथा के विकास के द्वारा स्थापित करने का

शेष आगे -

~~नि~~ निश्चय करके चले।

मुंशी प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों के द्वारा उपन्यास साहित्य के विकास का जो दूसरा चरण प्रस्तुत किया, इससे प्रभावित होकर अनेक नये उपन्यासकार उपन्यास क्षेत्र में आगे आये। जयशंकर प्रसाद, आचार्य शिव पूजन सहाय, पांडेय बेचन शर्मा उग्र, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह इत्यादि विद्वानों को हम प्रेमचन्द की परम्परा को आगे बढ़ाने का श्रेय दे सकते हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० कृ० सं० महावि० सुलसेना, पूर्णियाँ
09।04।20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

दिगंत- भाग-2 - काव्य खण्ड Date ______ Page ______

शीर्षक :- कड़बक

कवि :- मलिक मोहम्मद जायसी

महत्वपूर्ण अवतरणों की व्याख्या-

धनि सो पुरुष जस कीरति जासू ।
फूल मरै पै मरै न बासू ॥

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक दिगंत-भाग-2 के काव्य खण्ड में संकलित 'कड़बक' शीर्षक से ली गई है। इसके रचयिता सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि का कहना है कि जिस प्रकार पुष्प अपने नश्वर शरीर का त्याग कर देता है किन्तु उसकी सुगन्ध धरती पर परिव्याप्त रहती है, ठीक उसी प्रकार महान व्यक्ति भी इस धाम पर अवतरित होकर अपनी कीर्ति पताका सदा के लिए इस भुवन पर फहरा जाते हैं। पुष्प सुगंध सदृश्य यशस्वी लोगों की भी कीर्तियाँ नष्ट नहीं होती हैं। बल्कि युग-युगान्तर तक उनकी लोक हितकारी भावनाएँ जन-जन के कंठ में विराजमान रहती है।

इस पद्यांश के माध्यम से सूफी संत कवि मलिक मोहम्मद जायसी ने कर्म की प्रधानता को महत्व देते हुए कहा है कि मानव जीवन श्रेष्ठ कर्म से ही व्यक्ति की पहचान बनती है। इसी से वैसे व्यक्ति युगों-युगों तक याद किये जाते हैं।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० ब्र० सं० महावि० सुरसेना, पूर्णियाँ
07/08/20